

# श्री गणेश पुराणम् THE GAṆEŚA PURĀṆAM

( विषयानुक्रम )



नाग पब्लिशर्स

११. ए. यू. ए., जवाहर नगर, दिल्ली-११० ००७ (भारत)

## श्रीगणेश पुराण -उपासना खण्ड

### अनुक्रमणिका

| अध्याय | विषय   | पृष्ठ | अध्याय | विषय   | पृष्ठ |
|--------|--|-------|--------|--|-------|
| १.     | राजासोमकान्तस्य कथा  | १     | १४.    | विध्वैर्व्याकुलो ब्रह्मदेव "तपः कुरु" इति आकाशवाणीं शृणोति | ३०    |
| २.     | सोमकान्तस्य अङ्गेभ्य गलितकुष्ठरोगस्य उद्भवः, वनं गन्तुं च विचारः | ३     | १५.    | ब्रह्मदेवस्य तपः गणेशदर्शनं तस्य पूजाविधिश्च               | ३१    |
| ३.     | सोमकान्तस्य पुत्रेभ्य उपदेशः-आचारादि निरूपणम्                    | ५     | १६.    | मधुकैटभदैत्ययोरूत्पत्तिः-ब्रह्मदेवो देवीं प्रार्थयते       | ३३    |
| ४.     | राजा वनं प्रविष्टः   | ८     | १७.    | महाविष्णुना शङ्करं प्रति गजाननस्य षडक्षरीमन्त्रोपदेशः      | ३५    |
| ५.     | ✓ भृगुपुत्रच्यवनेन सहसमीपगमनम्                                   | १०    | १८.    | महाविष्णुना गणेशाय दर्शनं वरप्रदानञ्च-                     |       |
| ६.     | भृगो आश्रमे सोमकान्तस्य निवासः                                   | १३    |        | सिद्धक्षेत्रस्योत्पत्तिः                                   | ३८    |
| ७.     | सोमकान्तस्य पूर्वजन्मनः कथा ✓                                    | १५    | १९.    | राजाभीमस्य राइया कमलया पुत्रप्राप्तिः-पुत्रस्य वर्णनम्     | ४०    |
| ८.     | भृगोर्हुङ्कारेण नानाशङ्कानां निवारणम्                            | १७    | २०.    | कमलापुत्रेण दक्षेण गणेशदर्शनम्                             | ४३    |
| ९.     | भृगोर्राजानं प्रति उपदेशः  | १९    | २१.    | मुद्गलदक्षेण गणेशमन्त्रस्य जापः                            | ४६    |
| १०.    | गणेशमङ्गलाभावे व्यासस्य भ्रान्तिः ब्रह्मदेवसमीपगमनञ्च            | २२    | २२.    | गणेशभक्तबल्लालेन गणेशदर्शनम्                               | ४९    |
| ११.    | ब्रह्मदेवेन व्यासाय गणेशमन्त्रोपदेशः                             | २३    | २३.    | वैश्यकल्याणस्य अवस्था                                      | ५३    |
| १२.    | देवैर्गजाननस्य दर्शनम्   | २५    | २४.    | दक्षेण कृतमनुष्ठानं शुभस्वपनञ्च                            | ५५    |
| १३.    | गजाननस्योदरात् सृष्टिप्रभावाय ब्रह्मदेवेन स्तुतिः                | २७    | २५.    | राजा चन्द्रसेनस्य मृत्युः-राइयःसुलभायाः शोकः               | ५६    |

| * * * * * | अध्याय | विषय   | पृष्ठ | अध्याय | विषय  | पृष्ठ | * * * * * |
|-----------|--------|--|-------|--------|---|-------|-----------|
| * * * * * | २६.    | दक्षस्य राज्यप्राप्तिः वंशविस्तारश्च                         | ५८    | ४१.    | गजानेन, ब्राह्मणरूपेण त्रिपुरं पुरतः समर्पणम्                   | ९६    | * * * * * |
| * * * * * | २७.    | रुक्मागदाभिषेकवर्णनम्  | ६०    | ४२.    | शङ्करत्रिपुरयोर्युद्धम्   | ९८    | * * * * * |
| * * * * * | २८.    | मुकुन्देन रुक्मागदं प्रतिशापः नारददर्शनञ्च                   | ६२    | ४३.    | शङ्करस्य पराजय पार्वत्याश्च हिमालयसमीपगमनम्                     | १००   | * * * * * |
| * * * * * | २९.    | रुक्मागदं प्रति नारदकृतोपदेशः                                | ६४    | ४४.    | शङ्करेण तपः गजानेन दर्शनम्, शङ्करेण वरप्राप्तिः                 | १०३   | * * * * * |
| * * * * * | ३०.    | ✓ अहिल्यायाः पातिव्रत्यभङ्गम्                                | ६५    | ४५.    | शङ्कराय गणेशेन 'गणेशसहस्रनाम' स्तुतिं कर्तुमुपदेशयः             | १०५   | * * * * * |
| * * * * * | ३१.    | गौतमेन इन्द्रं प्रति शापः                                    | ६७    | ४६.    | गणेशसहस्रनाम  | १०८   | * * * * * |
| * * * * * | ३२.    | गौतमेन षडक्षरीमन्त्रेण देवानां स्तुतिः                       | ६९    | ४७.    | शङ्करत्रिपुरयोद्धम् त्रिपुरदहनञ्च                               | ११९   | * * * * * |
| * * * * * | ३३.    | षडक्षरमन्त्रप्रभावात् इन्द्रस्य दिव्यदेहधारणम्               | ७१    | ४८.    | पार्वत्यारागमनम् पार्थिवपूजा (भाद्रपदस्य शुद्धचतुर्थीपर्यन्तम्) | १२२   | * * * * * |
| * * * * * | ३४.    | ✓ इन्द्रेण तपः गणेशदर्शनम्-चिन्तामणितीर्थस्य वर्णनम्         | ७३    |        | माहात्म्यम्   | १२२   | * * * * * |
| * * * * * | ३५.    | रुक्मागदेन दिव्यदेहप्राप्तिः गजाननस्य लोकं प्रतिप्रयाणञ्च    | ७६    | ४९.    | गणेशस्य पार्थिवपूजायां वर्णनम्                                  | १२४   | * * * * * |
| * * * * * | ३६.    | मुकुन्दा-इन्द्रसंयोगेन गृत्समदस्योत्पत्तिः तस्य गर्वमानयोश्च | ७९    | ५०.    | पार्थिवपूजा-पार्वतीहिमालययोर्संवादः                             | १२८   | * * * * * |
| * * * * * |        | खण्डनम् । मात्रा पुत्रेण च परस्परं शापः                      |       | ५१.    | पार्थिवगणेशव्रते हिमालयस्यपार्वत्याश्च सहागमनम्                 | १३०   | * * * * * |
| * * * * * | ३७.    | गृत्समदो तपस्तपति गजाननदर्शनं वरप्राप्तिश्च                  | ८२    | ५२.    | पार्थिव गणेश व्रते नृपनलस्य पूर्ववृत्तान्तम्                    | १३८   | * * * * * |
| * * * * * | ३८.    | गृत्समदस्याद्भुत (त्रिपुरासुरस्य) त्रिपुरस्य तपः गणेशेन      |       | ५३.    | पार्थिव गणेश व्रते नृपचन्द्राङ्गदस्य कथा                        | १३९   | * * * * * |
| * * * * * |        | दत्तं वरदानञ्च   | ८५    | ५४.    | पार्थिव गणेश व्रते राज्ञीन्दुमत्यै नारदेन व्रतं कर्तुमुपदेशः    | १४२   | * * * * * |
| * * * * * | ३९.    | त्रिपुरासुरेण इन्द्रस्य पराभवः                               | ८८    | ५५.    | पार्थिव गणेश व्रते पूजाव्रतप्रभावात् पार्वतीशङ्करयोर्मेलनम्     | १४५   | * * * * * |
| * * * * * | ४०.    | त्रिपुरासुरेण ब्रह्मदेवस्य पराजयः देवैश्च तपः                | ९२    | ५६.    | शूरसेनस्य राजघान्यां इन्द्रविमानस्य पतनम्                       | १४८   | * * * * * |

| * अध्याय | * विषय   | * पृष्ठ | * अध्याय | * विषय  | * पृष्ठ |
|----------|--|---------|----------|---|---------|
| ५७.      | गणेशनामस्मरणप्रभावेण पापात्मना तन्तुवायेन धूशुंडीरूपधारणम्                                     | १५०     | ७०.      | पूर्वकाले संकष्टचतुर्थीव्रतं केन केन कृतम्  | १९२     |
| ५८.      | सङ्कष्टचतुर्थीव्रतमहिमा - कृतवीर्यस्य कथा  | १५४     | ७१.      | संकष्टचतुर्थीव्रतोद्यापनाविधिः  | १९४     |
| ५९.      | संकष्टचतुर्थीव्रतेन कृतवीर्यस्योपलब्धिः  | १५६     | ७२.      | कृतवीर्येणाङ्गहीनस्य पुत्रस्य प्राप्तिः   | १९६     |
| ६०.      | अङ्गारकचतुर्थ्याः व्रतस्य माहात्म्यम्  | १५९     | ७३.      | कृतवीर्यपुत्राय प्रवालक्षेत्रानुष्ठानं गणेशदर्शनं (कृतवीर्येण) सहस्रभुजानां च प्राप्तिः | १९९     |
| ६१.      | संकष्टचतुर्थीव्रतमहिमा - चन्द्रस्य शापोऽनुग्रहश्च दूर्वायामाहात्म्यम् (अध्याय ६२-६७) पर्यन्तम् | १६२     | ७४.      | संकष्टचतुर्थीव्रतबोधकस्य चाण्डालस्य कथा   | २०२     |
| ६२.      | सुलभक्षत्रियपत्नीसमुद्रया ब्राह्मणेन मधुसूदनेन च अन्योऽन्यं प्रतिशापः                          | १६६     | ७५.      | राजाशूरसेनेन चतुर्थीव्रताचरणं तत्फलञ्च  | २०५     |
| ६३.      | दूर्वायाः प्रशस्तिः-कालानलासुरस्य कथा  | १७०     | ७६.      | दूर्वापुत्रषुष्यस्य कथा, चतुर्थीव्रतस्य दूर्वानाम्नाश्च महिमा                           | २०८     |
| ६४.      | कौण्डिन्यमुनेराख्यानम्   | १७३     | ७७.      | सहस्रार्जुनस्य जमदग्नेराश्रममागमनम्, भोजन प्रसङ्गश्च                                    | २३१     |
| ६५.      | राजाजनकस्य सत्वहरणम्   | १७५     | ७८.      | कार्तवीर्येण (सहस्रार्जुनेन) कामधेनुं नेतुं प्रयत्नः                                    | २१७     |
| ६६.      | विरोचना त्रिशिराभ्यां प्रदत्तयार्वया गजाननस्य तृप्तिः  | १७८     | ७९.      | कामधेनुनोत्पन्नेन सैन्येन कार्तवीर्यस्य पराभवः जमदग्नेश्च हत्या                         | २२०     |
| ६७.      | एकस्यापि दूर्वाङ्कुरस्य कौण्डिन्यपत्न्यै आश्रयप्रदानेसामर्थ्यम्                                | १८१     | ८०.      | रेणुकया देहत्यागः   | २२३     |
| ६८.      | कृतवीर्येण संकष्टचतुर्थीव्रताचरणम्   | १८५     | ८१.      | दत्तात्रेयस्य स्तुत्या पितराणामौर्ध्वदैहिकम्  | २२५     |
| ६९.      | संकष्टचतुर्थीव्रतस्य साङ्गोपाङ्गमहिमा  | १८७     | ८२.      | रामेण मयूरेशक्षेत्रे तपः, मयूरेशदर्शनम्, परशुप्राप्तिश्च                                | २२८     |
|          |  |         | ८३.      | तारकासुरोत्पत्तिः   | २३१     |
|          |  |         | ८४.      | शङ्करस्य समीपं कामदेवस्य भस्मीभवनम्   | २३५     |

| अध्याय | विषय   | पृष्ठ |
|--------|--|-------|
| ८५.    | स्कन्दोपत्तेरितिहासः   | २३६   |
| ८६.    | शङ्करेण स्कन्दाय गणेशव्रतकथनम्   | २४०   |
| ८७     | एलापुरक्षेत्रे स्कन्देन तपः, लक्षविनायकप्रभुना वरदानम्<br>तारकासुर वधश्च | २४२   |
| ८८.    | कामेन (अनङ्गेन) कृतं तपः, गणेशेन वरप्रदानम्                              | २४६   |
| ८९.    | कामस्य (मदनस्य ) पुनर्जन्म-शेषस्य कथा                                    | २५०   |
| ९०.    | नारदस्योपदेशानुसारं शेषेन कृतं तपः, गणेशप्रसादनञ्च                       | २५३   |
| ९१.    | गजाननस्य स्तुतिः   | २५७   |
| ९२.    | गजाननस्य “सुमुखे” त्यादिद्वादशनाम्नां महत्त्वम्                          | २६०   |

### श्री गणेश पुराण क्रीडाखण्डस्य

#### विनायक अवतार (कृतयुग) अनुक्रमणिका

|    |                                   |    |
|----|-----------------------------------|----|
| १. | नारदस्योपदेशः                     | १  |
| २. | नरान्तकदेवान्तकाभ्यां वरप्राप्तिः | ५  |
| ३. | देवान्तकस्य विजयः                 | ७  |
| ४. | नरान्तकस्य विजयः                  | ११ |

| अध्याय | विषय                            | पृष्ठ |
|--------|---------------------------------|-------|
| ५.     | अदित्या वरप्राप्तिः             | ५     |
| ६.     | विनायकावतारः                    | ६     |
| ७.     | विरजायाः राक्षस्याः विजयः       | ७     |
| ८.     | नक्रस्य शापमुक्तिः              | ८     |
| ९.     | हाहाहूहोभ्रमनिरासः              | ९     |
| १०.    | नानानामनिरूपणम्                 | १०    |
| ११.    | इन्द्रस्य गर्वभञ्जनम्           | ११    |
| १२.    | निशाचरस्य वधः                   | १२    |
| १३.    | विघटदन्तुरयोर्वधः               | १३    |
| १४.    | राक्षसीजृम्भावधः                | १४    |
| १५.    | नगरस्य वर्णनम्                  | १५    |
| १६.    | काशीराज्ञःभृशुण्डोराश्रमे गमनम् | १६    |
| १७.    | देवः भक्तमीलनस्तथा              | १७    |
| १८.    | कपटीदैत्यस्य वधः                | १८    |
| १९.    | कूपकन्दरयोर्वधः                 | १९    |
| २०.    | अन्धकाभासुरतुंगानांघः वधः       | २०    |
| २१.    | राक्षसीभ्रमर्यार्व              | २१    |

| पृष्ठ |
|-------|
| १३    |
| १७    |
| २०    |
| २३    |
| २६    |
| २९    |
| ३२    |
| ३५    |
| ३८    |
| ४१    |
| ४५    |
| ४८    |
| ५१    |
| ५५    |
| ५९    |
| ६२    |
| ६६    |

| अध्याय | विषय                                | पृष्ठ | अध्याय | विषय                              | पृष्ठ |
|--------|-------------------------------------|-------|--------|-----------------------------------|-------|
| २२.    | शुक्रविद्रुमसंवादः                  | ७०    | ३९.    | शिवस्य काश्याः प्रयाणम्           | १२१   |
| २३.    | शुक्रस्य गृहे विनायकस्य भोजनम्      | ७४    | ४०.    | पार्वत्या तेजात् सुतोत्पत्तिः     | १२३   |
| २४.    | सनकसनन्दयोर्बोधः                    | ७८    | ४१.    | दुरासदस्य पराजयः                  | १२६   |
| २५.    | भक्तिप्रशंसा                        | ८१    | ४२.    | काशीस्थ षटपञ्चाशत् विनायकाः       | १२९   |
| २६.    | राक्षसीभीमायारूद्धारः               | ८३    | ४३.    | दुंढीराजमाहात्म्यम्               | १३१   |
| २७.    | साम्बस्य दुराचरणम्                  | ८५    | ४४.    | दिवोदासकथा                        | १३२   |
| २८.    | भीमस्यपूर्ववृत्तान्तः               | ८७    | ४५.    | दिवोदास कथा                       | १३४   |
| २९.    | विरोचनवधः                           | ९०    | ४६.    | दुंढीराज्ञः ज्योतिषीरूपं घाशयति   | १३७   |
| ३०.    | वामनावतारकथा                        | ९२    | ४७.    | दिवोदासस्य राजपरित्यागः           | १४०   |
| ३१.    | बलेः पातालगमनम्                     | ९५    | ४८.    | कीर्त्तिप्राप्तं वरदानम्          | १४३   |
| ३२.    | शमीमहात्म्यम् कीर्त्याः कथा         | ९९    | ४९.    | शमीमन्दारप्रभाववर्णनम्            | १४७   |
| ३३.    | कीर्त्तेः मृत्शरीरात् युवकोत्पत्तिः | १०२   | ५०.    | गणेशलोकवर्णनम्                    | १४९   |
| ३४.    | और्वशौनकयोक्तृणां                   | १०६   | ५१.    | काशिराजस्य विमानारोहणम्           | १५४   |
| ३५.    | शमीमन्दारयोर्प्रशंसा                | १०९   | ५२.    | (काशिराजस्य) स्वानन्दभुवने आगमनम् | १५७   |
| ३६.    | देवाङ्गनाभिः वरप्रदानम्             | १११   | ५३.    | काशीराजेन स्वानन्दप्राप्तिः       | १६१   |
| ३७.    | शमीमन्दारमाहात्म्यम्                | ११४   | ५४.    | बालचरितम्                         | १६५   |
| ३८.    | दुरासदचरित्रम्                      | ११६   | ५५.    | दूतस्य प्रेषणम्                   | १६९   |

| अध्याय | विषय                          | पृष्ठ | अध्याय | विषय                                      | पृष्ठ |
|--------|-------------------------------|-------|--------|---|-------|
|        |                               |       |        | श्री मयूरेशावतारकथा (त्रेतायुगीनचरित्रम्) |       |
| ५६.    | नरान्तकस्य यात्रा             | १७३   | ७३.    | दैत्यसिन्धोरुत्पत्तिः                     | २२२   |
| ५७.    | काशिराजस्य बन्धनम्            | १७७   | ७४.    | सिन्धवे सूर्येण वरप्रदानम्                | २२६   |
| ५८.    | नरान्तकेन कालपुरुषरूपधारणम्   | १८०   | ७५.    | देवानां पराजयः                            | २२९   |
| ५९.    | राज्ञो वर्णनम्                | १८४   | ७६.    | विष्णोः पराक्रमः                          | २३१   |
| ६०.    | विनायकनरान्तकयोर्युद्धम्      | १८६   | ७७.    | सिन्धोरनन्वितकृत्याणि                     | २३३   |
| ६१.    | दैत्यदमनं विराटरूपदर्शनञ्च    | १९०   | ७८.    | देवैः वरप्राप्तिः                         | २३५   |
| ६२.    | देवान्तकस्य नगराद् पलायनम्    | १९३   | ७९.    | गौर्या मन्त्रप्रदानम्                     | २३७   |
| ६३.    | शुकस्य दूरदेशगमनम्            | १९७   | ८०.    | पार्वत्यास्तपो वरदानञ्च                   | २४०   |
| ६४.    | अष्टसिद्धीनां पराजयः          | १९९   | ८१.    | गणेश्यावतारः                              | २४१   |
| ६५.    | बुद्धेर्विजयः                 | २०२   | ८२.    | सिन्धुदैत्यनेश्वराराधनम्                  | २४४   |
| ६६.    | सिद्धीनां पराभवः              | २०४   | ८३.    | ग्रभ्रासुरस्य वधः                         | २४६   |
| ६७.    | अस्त्रयुद्धम्                 | २०६   | ८४.    | बालासुरस्य वधः                            | २४९   |
| ६८.    | अस्त्रयुद्धम्                 | २०९   | ८५.    | गणेशकवचेन रक्षणम्                         | २५३   |
| ६९.    | देवदैत्ययुद्धम्               | २१२   | ८६.    | व्योमासुरस्य वधः                          | २५५   |
| ७०.    | देवान्तकस्य वधः पुरप्रवेशनञ्च | २१५   | ८७.    | कमठासुरस्य वधः                            | २५७   |
| ७१.    | विनायकस्याऽऽश्रमेऽऽगमनम्      | २१७   | ८८.    | दैत्यानां वधः                             | २६०   |
| ७२.    | विनायकस्य स्वलोकगमनम्         | २१९   |        |   |       |

| अध्याय | विषय  | पृष्ठ | अध्याय | विषय                                   | पृष्ठ |
|--------|---|-------|--------|--|-------|
| * ८९.  | शलभासुरस्य वधः                                  | २६२   | १०६.   | मयूरेशस्य विनोदः                       | ३११   |
| * ९०.  | अविजयस्य वधः                                    | २६५   | १०७.   | इन्द्रगर्वहरणम्                        | ३१३   |
| * ९१.  | शैलासुरस्य वधः                                  | २६७   | १०८.   | यमस्य गर्वहरणम्                        | ३१६   |
| * ९२.  | पार्वत्या विश्वरूपदर्शनम्                       | २७१   | १०९.   | मुनिबालकैर्दैत्यवधः                    | ३१८   |
| * ९३.  | चञ्चलदैत्यस्य वधः                               | २७४   | ११०.   | युद्धायाहृतो नन्दी सिन्धोः समीपंगच्छति | ३२०   |
| * ९४.  | गौतमस्य मोहनिवारणम्                             | २७७   | १११.   | मयूरेशस्य युद्धाय निश्चयः              | ३२१   |
| * ९५.  | वृकासुरस्य वधः                                  | २७९   | ११२.   | सिन्धोर्युद्धप्रारम्भः                 | ३२४   |
| * ९६.  | गौरी-अदित्योश्च संवादः (गौर्यादित्योश्च संवादः) | २८२   | ११३.   | मित्रकौस्तुभयोर्वधः                    | ३२६   |
| * ९७.  | पक्षानां बन्धनम्                                | २८६   | ११४.   | युद्धवर्णनम्                           | ३२८   |
| * ९८.  | शिखण्डिने वरदानम्                               | २८८   | ११५.   | सिन्धुदैत्येन विद्रूपरूपधारणम्         | ३३१   |
| * ९९.  | मयूरेशस्य नागलोकगमनम्                           | २९१   | ११६.   | मयूरेशस्याधिपत्ये देवैराक्रमणम्        | ३३३   |
| * १००. | भगासुरस्य वधः                                   | २९५   | ११७.   | दुर्गायाः सिन्धुवेरुपदेशः              | ३३६   |
| * १०१. | दैत्यसैन्यस्य वधः                               | २९८   | ११८.   | कलविकलयोर्वधः                          | ३३८   |
| * १०२. | कमलासुरेण संग्रामः                              | ३००   | ११९.   | सिन्धोःपुत्राणां वधः                   | ३४०   |
| * १०३. | कमलासुरस्य वधः                                  | ३०२   | १२०.   | सिन्धोः पित्रा सह संवादः               | ३४२   |
| * १०४. | ब्रह्मदेवस्य गर्वहरणम्                          | ३०४   | १२१.   | सिन्धोः पराभवः                         | ३४५   |
| * १०५. | विश्वदेवानां भेदबुद्धेर्नैराशयम्                | ३०७   | १२२.   | दैत्यसेनायाः वधः                       | ३४८   |



| अध्याय | विषय                                  | पृष्ठ | अध्याय | विषय   | पृष्ठ |
|--------|---------------------------------------|-------|--------|--|-------|
| १२३.   | सिन्धोर्वधः                           | ३५१   | १३९.   | श्री गणेशगीतायां कर्मयोगः                    | ३९१   |
| १२४.   | गणेशस्य गण्डकनगर्या प्रवेशः           | ३५४   | १४०.   | श्री गणेशगीतायां ब्रह्मार्पणयोगः             | ३९३   |
| १२५.   | मयूरेशस्य विवाहः                      | ३५६   | १४१.   | श्री गणेशगीतायां कर्मसन्यासयोगः              | ३९६   |
| १२६.   | मयूरेशचरित्रस्य फलश्रुतिः             |       | १४२.   | श्री गणेशगीतायां योगावृत्तिप्रशंसा           | ३९८   |
|        | गजाननस्यावतारः (द्वापरयुगे)           | ३५९   | १४३.   | श्रीगणेशगीतायां 'योगावृत्तिबुद्धियोगः'       | ३९९   |
| १२७.   | सिन्दुरासुरस्योत्पत्तिः               | ३६२   | १४४.   | श्री गणेशगीतायामुपासनायोगः                   | ४००   |
| १२८.   | सिन्दुरस्य पराजयः                     | ३६४   | १४५.   | श्री गणेशगीतायां विश्ववीपरूक्षणयोगः          | ४०१   |
| १२९.   | गौरीकथा                               | ३६८   | १४६.   | श्री गणेशगीतायां क्षेत्र क्षेत्रज्ञविवेकयोगः | ४०३   |
| १३०.   | गजाननस्याविर्भावः                     | ३७०   | १४७.   | श्री गणेशगीतायामुपदेशयोगः                    | ४०५   |
| १३१.   | गन्धर्वानां पराजयः                    | ३७३   | १४८.   | श्री गणेशगीतायां गुणत्रयकृतियोगः             | ४०६   |
| १३२.   | कैलाशपर्वते गमनम्                     | ३७४   | १४९.   | व्यासेन गणेशस्य दर्शनम्                      | ४०९   |
| १३३.   | पराशरदर्शनम्                          | ३७६   | १५०.   | व्यासाय वरप्रदानम्                           | ४११   |
| १३४.   | मूषकवाहनम्                            | ३७८   | १५१.   | सोमकान्तस्य विमानप्राप्तिः                   | ४१२   |
| १३५.   | क्रौञ्चेन गन्धर्वाय शापः              | ३८०   | १५२.   | सोमकान्तेन देवनगराय गमनम्                    | ४१४   |
| १३६.   | सिन्दूरेण सह युद्धम्                  |       | १५३.   | सोमकान्तस्य देवपदप्राप्तिः                   | ४१७   |
|        | श्रीमद्गणेश गीता (११अ.)               | ३८२   | १५४.   | वाराणस्यां विनायकः                           | ४१९   |
| १३७.   | सिन्दूरासुरस्य वधः                    | ३८४   | १५५.   | फलश्रुतिः                                    | ४२०   |
| १३८.   | श्री गणेशगीतायां सांख्ययोगसारार्थयोगः | ३८७   | १५६.   | श्लोकानुक्रमणी                               | १     |